

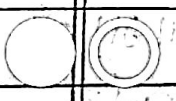
औरने एकवर्गीय हाइत गेला। संस्कृत में रचित साहित्यिक अर्थयत्न गाम परिपुत्र नर्ग प्यरि रयीमित शरै गेला।

लोक प्रचलित भाषा में साहित्य रचनाके परिचय उसके आरम्भभरि सँ गैरैत अछि। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक 'नपरिल्लाकर' तत्कालीन समय में प्राप्त गद्य रचनाके सनोक्छि छै पु भाषा मानल जाइत अछि। परनात्-विद्यापीठके अवदुद्ध औ मैथिली रचना तत्कालीन समयके भाषायी विकास केँ स्पष्ट करैत अछि। विद्यापीठके अवसानके पृथक्तर 1757 ई. में जखन पलाही पुस्तक उपरान्त मिथिला गाम नरि अपितु सम्पूर्ण प्रचलित मै अँग्रेजी साम्राज्यके स्थापना भू गेला तखनारिसँ गद्य में साहित्य रचनाके प्रत्यक्ष कार्य प्रारम्भ भेल छल। एहि प्रसंग मैथिलीके कूल आलोचक समीक्षक मोहन भारद्वाज जी विस्तार पूर्वक विचार कयने छथि - "अँग्रेज लोकनि अपन शासनके सुदृढ़ करणके उद्देश्य सँ जखन जनता प्यरि पद्यरचनाके विचार कयलनि तखन भाषामे गद्यके विकास आवश्यक लगलनि। अगैर समयमें जाहि तीन टा भाषाके कार्य कूलमें राखल गेल सँ छल बंगाली, उर्दू औ हिन्दी।"

क्रमशः

डॉ० पैकज कुमार  
अतिथि शिक्षक  
मैथिली विभाग

श्री विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय  
रजनीगरी (मधुबनी)



दिनांक 03/07/2020

स्नातक स्तरीय खंड

मैथिली कथा साहित्यक परम्परा

मैथिली साहित्यक विशिष्ट इतिहासकार डॉ. पुगनाथ झा जी संस्कृत साहित्यक महती क स्पष्ट करेन कहैत एहि गद्यक अभ्युदय विकास के लेल जकाँ हृदयांगम करवाक निमित्त हमरा लोकनि एकरा निम्नलिखित विभाग मे बाँटि सकैत छी -

- (1) आरम्भिक संस्कृतान्वित गद्य
- (क) संस्कृतान्वित विकासशील गद्य एवं
- (ख) विकसित गद्य ।

एहिमे प्रथम दुनू मे अन्तर बड़ा थोड़ा अछि । अन्तर एतब जे आरम्भिक संस्कृतान्वित गद्य संस्कृतक व्याकरण आ आश्रयित रीति छै जकर लगेत अछि तँ संस्कृतान्वित विकासशील गद्य मे क्रमिक संस्कृतक प्रभाव क्षीण होत परत होत अछि आ पूर्णतः स्वाभाविक लगेत अछि । कहबक तात्पर्य जे तत्कालीन समय मे संस्कृतक प्रभाव तरेक व्यापक भए गेल, प्रयोगक सभ्यता एवं व्याकरणक नियम पूर्वक प्रयोग से एकर स्वरूप तरेक स्थिर भए गेल जे ओ सभ्यता भारतवर्ष मे एक समान रूपे प्रसारित भए गेल । एतब होत देखल जाय तऽ यदि एक दिख संस्कृतक प्रभाव समाज आ साहित्य पर व्यापक रूपे पड़ल तऽ दोसर दिख ओ संकुचित सैहो होमथ लागल । किन्तु तऽ आदि कति प्राचीनक काल मे जे संस्कृत विज्ञानिक भाषा छल से क्रमिक रूपे मात्र विद्वत वर्गक भाषा बनल गेल । जनसामान्य मध्य प्रचलित लोक भाषा मे स्थितिजन्य परिवर्तन होब गेल लोक भाषा जनक समूह मे संस्कृत